नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

सूयगडो-निज्जुत्ति

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

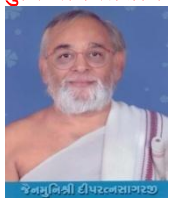

श्रीसूत्रकृताङ्गनिर्युक्तिः—तित्थयरे य जिणवरे सुत्तकरे गणहरे य णमिऊणं । सूयगडस्स भगवओ णिज्जुत्तिं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ सूयगडं अङ्गाणं बिइयं तस्स य इमाणि नामाणि । सूतगडं सुत्तकडं सूयगडं चेव गोण्णाइं ॥ २ ॥ दव्वं तु बोण्डयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाणं । सन्ना १ संगह २ वित्ते ३ जाइणिबद्धे ४ य कत्थाइ ॥ ३ ॥ करणं च कारओ य कडं च तिण्हंपि छक्कनिक्खेवो । दव्वे खेत्ते काले भावेण उ कारओ जीवो ॥४॥ दव्वं पओगवीसस पओगसा मूल उत्तरे चेव । उत्तरकरणं वञ्जण अत्थो उ उवक्खरो सव्वो ॥ ५॥ मूलकरणं सरीराणि पञ्च तिसु कण्णखन्धमाईयं । दव्विन्दियाणि परिणामियाणि विसओसहाईहिं ॥६॥ संघायणे१ य परिसाडणा२ य मीसे३ तहेव पडिसेहो४ । पड१ संख२ सगड३ थूणा उट्ठतिरिच्छादिकरणं च४॥७॥ खन्धेसु दुप्पएसादिएसु अन्भेसु विज्जुमाईसु । णिप्फण्णगाणि दव्वाणि जाण तं वीससाकरणं ॥८॥ ण विणा आगासेणं कीरइ जं किंचि खेत्तमागासं । वञ्जणपरियावण्णं उच्छुकरणमाइयं बहुहा ॥ ९॥ कालो जो जावइओ जं कीरइ जम्मि जम्मि कालम्मि । ओहेण णामओ पुण करणा एक्कारस हवन्ति ॥ १० ॥ बवं च बालवं चेव, कोलवं तेत्तिलं तहा । गरादि वणियं चेव, विट्ठी हवइ सत्तमा ॥ ११ ॥ सउणि चउप्पय नागं किंसुग्घं च करणं भवे एयं । एए चत्तारि धुवा अन्ने करणा चला सत्त ॥ १२॥ चाउद्दसिरत्तीए सउणी पडिवज्जए सया करणं । तत्तो अहक्कमं खलु चउप्पयं णाग किंसुग्घं ॥१३॥ भावे पओगवीसस पओगसा मूल उत्तरे चेव । उत्तर कमसुयजोव्वण वण्णाई भोयणाईसु ॥१४॥ वण्णाइया य वण्णाइएसु जे केइ वीससामेला । ते होन्ति थिरा अथिरा छायाऽऽतवदुद्धमाईसु ॥ १५ ॥ मूलकरणं पुण सुए तिविहे जोगे सुभासुभ झाणे । ससमयसुएण पगयं अज्झवसाणेण य सुहेणं ॥ १६ ॥ ठिइअणुभावे बन्धणनिकायणनिहत्तदीहहस्सेसु । संकमउदीरणाए उदए वेए उवसमे य ॥ १७॥ सोऊण जिणवरमयं गणहारी काउ तक्खओवसमं । अज्झवसाणेण कयं सुत्तमिणं तेण सूयगडं ॥ १८॥ वइजोगेण पभासियमणेगजोगंधराण साहूणं । तो वयजोगेण कयं जीवस्स सा(स्सा)भावियगुणेण ॥१९॥ अक्खरगुणमतिसंघायणाएँ कम्मपरिसाडणाए य । तदुभयजोगेण कयं सुत्तमिणं तेण सुत्तगडं ॥२०॥ सुत्तेण सुत्तियाचिय अत्था तह सूइया य जुत्ता य । तो बहुविहप्पउत्ता एय पसिद्धा अणाईया ॥२१॥ दो चेव सुयक्खन्धा अज्झयणाइं च होन्ति तेवीसं । तेत्तिसुदे(शीसुद्दे)सणकाला(ल) आयाराओ दुगुणमङ्गं ॥२२॥ निक्खेवो गाहाए चउव्विहो छव्विहो य सोलसहा । निक्खेवो य सुयम्मि य खन्धे य चउव्विहो होइ ॥२३॥ ससमयपरसमयपरूवणा य१ णाऊण बुज्झणा चेव२ । संबुद्धस्सुवसग्गा३ थीदोसविवज्जणा चेव४ ॥२४॥ उवसग्गभीरुणो थीवसस्स नरएसु होज्ज उववाओ५ । एव महप्पा वीरो जयमाह तहा जएज्जाह६ ॥२५॥ परिचत्तनिसीलकुसील सुसीलसंविग्गसीलवं चेव७ । णाऊण

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरियदुगं पण्डियवीरिए पयट्टिज्जा८ ॥२६॥ धम्मो९ समाहि१० मग्गो११ समोसढा चउसु सत्तवाईसु१२। सीसगुणदोसकहणा१३ गन्थम्मि सया गुरुनिवासो१४ ॥२७॥ आयाणिय संकलिया आयाणीयम्मि आययचरित्तं१५। अप्पग्गन्थे पिण्डियवयणेणं होइ अहिगारो१६ ॥ २८ ॥ नामं ठवणा दविए खेत्ते काले कुतित्थ-संगारे। कुल-गण-संकर-गण्डी बोद्धव्वो भावसमए य ॥ २९ ॥ महपञ्चभूय एकप्पए य तज्जीवतस्सरीरे य। तह य अगारगवाई अत्तच्छट्ठो अफलवाई ॥३०॥ बीए नियईवाओ अन्नाणिय तह य नाणवाई उ। कम्मं चयं न गच्छइ चउव्विहं भिक्खुसमयम्मि ॥३१॥ तइए आहाकम्मं कडवाई जह य ते य वाईओ। किच्चुवमा य चउत्थे परप्पवाई अविरएसु ॥३२॥ पञ्चण्हं संजोए अन्नगुणाणं च चेयणाइगुणो। पञ्चिन्दियठाणाणं ण अन्नमुणियं मुणइ अन्नो ॥३३॥ को वेएई अकयं ? कयनासो पञ्चहा गई नत्थि। देवमणुस्सगयागइ जाईसरणाइयाणं च ॥ ३४ ॥ ण हु अफलथोवऽणिच्छियऽकालफलत्तणमिहं अदुमहेऊ। णादुद्धथोवदुद्धत्तणेणऽगावित्तणे हेऊ ॥३५॥ अ.१ ॥ वेयालियम्मि वेयालगो य वेयालणं वियालणियं। तिन्निवि चउक्कगाइं वियालओ एत्थ पुण जीवो ॥३६॥ दव्वं च परसुमाई दंसणणाणतवसंजमा भावे। दव्वं च दारुगाई भावे कम्मं वियालणियं ॥ ३७॥ वेयालियं इह देसियंति वेयालियं तओ होइ। वेयालियं तहा वित्तमत्थि तेणेव य णिबद्धं ॥ ३८ ॥ कामं तु सासयमिणं कहियं अट्ठावयम्मि उसभेणं। अट्ठाणउति-सुयाणं सोऊणं तेऽवि पव्वइया ॥३९॥ पढमे संबोहो अनिच्चया य बीयम्मि माणवज्जणया। अहिगारो पुण भणिओ तहा तहा बहुविहो तत्थ ॥४०॥ उद्देसम्मि य तइए अन्नाणचियस्स अवचओ भणिओ। वज्जेयव्वो य सया सुहप्पमाओ जइजणेणं ॥ ४१ ॥ दव्वं निद्दावेओ दंसणनाणतवसंजमा भावे। अहिगारो पुण भणिओ नाणे तवदंसणचरित्ते ॥ ४२ ॥ तवसंजमणाणेसुवि जइ माणो वज्जिओ महेसीहिं। अत्तसमुक्करिसत्थं किं पुण हीला उ अन्नेसिं ? ॥४३॥ जइ ताव निज्जरमओ पडिसिद्धो अट्टमाणमहणेहिं। अविसेसमयट्ठाणा परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥ ४४ ॥ अ.२ ॥ उवसग्ग-म्मि य छक्कं दव्वे चेयणमचेयणं दुविहं। आगन्तुगो य पीलाकरो य जो सो उवस्सग्गो ॥ ४५ ॥ खेत्तं बहुओघपयं कालो एगन्तदूसमाईओ। भावे कम्मब्भुदओ सो दुविहो ओघुवक्कमिओ ॥४६॥ ओवक्कमिओ संयमविग्घकरे एत्थुवक्कमे पगयं। दव्वे चउव्विहो देवमणुयतिरियायसंवेतो ॥४७॥ एक्केक्को य चउविहो अट्ठविहो वावि सोलसविहो वा। घट्टण जयणा व तेसिं एत्तो वोच्छं अहीयारं ॥४८॥ पढमम्मि य पडिलोमा होन्ती अणुलोमगा य बिइयम्मि। तइए अज्झत्थविसीदणा य परवाइवयणं च ॥ ४९ ॥ हेउसरिसेहिँ अहेउएहिँ समयपडिएहिँ णिउणेहिं। सीलव्व-लियपन्नवणा कया चउत्थम्मि उद्देसे ॥५०॥ जह णाम मण्डलग्गेण सिरं छेत्तूण कस्सइ मणूसो। अच्छेज्ज पराहुत्तो किं नाम तओ ण घेप्पेज्ज ? ॥५१॥ जह वा विसगण्डूसं कोई घेत्तूण नाम तुण्हिक्को। अन्नेण अदीसन्तो किं नाम तओ नवि मरेज्जा ? ॥ ५२ ॥ जह नाम सिरिघराओ कोई रयणाणि णाम घेत्तूणं। अच्छेज्ज पराहुत्तो किं णाम तओ न घेप्पेज्जा ? ॥ ५३ ॥ ३॥ दव्वाभि-लावचिन्धे वेए भावे य इत्थिणिक्खेवो। अहिलावे जह सिद्धी भावे वेयम्मि उवउत्तो ॥५४॥ णामं ठवणादविए खेत्ते काले य पज्जणणकम्मे। भोगे गुणे य भावे दस एए पुरिसणिक्खेवा ॥५५॥ पढमे संथवसंलवमाइहिँ खलणा उ होइ सीलस्स। बिइए इहेव खलियस्स अवत्था कम्मबन्धो य ॥ ५६ ॥ सूरा मो मन्नन्ता कइयवियाहिं उवहिप्पहाणाहिं। गहिया हु अभयपज्जोयकूल-वालाइणो वहवे ॥ ५७ ॥ तम्हा ण उ वीसम्भो गन्तव्वो णिच्चमेव इत्थीसु। पढमुद्देसे भणिया जे दोसा ते गणन्तेणं ॥ ५८ ॥ सुसमत्था वऽसमत्था कीरन्ती अप्पसत्तिया पुरिसा। दीसन्ति सूरवाई णारीवसगा ण ते सूरा ॥५९॥ धम्मम्मि जो दढमई सो सूरो खत्तिओ य वीरो य। ण हु धम्मणिरुस्साहो पुरिसो सूरो सुबलिओऽवि ॥६०॥ एए चेव य दोसा पुरिससमाणावि इत्थि-याणंपि। तम्हा उ अप्पमाओ विरागमग्गम्मि तासिं तु ॥ ६१ ॥४॥ णिरए छक्कं दव्वे णिरया उ इहेव जे भवे असुभा। खेत्तं णिरओगासो कालो णिरएसु चेव ठिई ॥६२॥ भावे उ णिरयजीवा कम्मुदओ चेव णिरयपाओगो। सोऊण णिरयदुक्खं तवचरणे होइ जइयव्वं ॥ ६३ ॥ णामंठवणादविए खेत्ते काले तहेव भावे य। एसो उ विभत्तीए णिक्खेवो छव्विहो होइ ॥ ६४ ॥ पुढवी-फासं अण्णाणुवक्कमं णिरयवालवहणं च। तिसु वेदेन्ति अताणा अणुभागं चेव सेसासु ॥ ६५ ॥ अम्बे अम्बरिसी चेव, सामे य सबलेऽवि य। रोद्दोवरुद्द काले य, महाकालेत्ति आवरे ॥ ६६ ॥ असिपत्ते धणु कुम्भे, वालू वेयरणीऽवि य। खरस्सरे महाघोसे, एवं पन्नरसाहिया ॥६७॥ धाडेन्ति य पहाडेन्ति हणंति विन्धन्ति तह णिसुम्भन्ति। मुञ्चन्ति अम्बरतले अम्बा खलु तत्थ णेरइया ॥६८॥ ओहयहए य तहियं णिस्सन्ने कप्पणीहिँ कप्पन्ति। विदुलगचडुलगछिन्ने अम्बरिसी तत्थ णेरइए ॥६९॥ साडणपाडणतोडणबन्धणरज्जुहयप्पहारेहिं। सामा णेरइयाणं पवत्तयन्ती अपु-ण्णाणं ॥७०॥ अन्तगयफिप्फिसाणि य हियय कालेज्ज फुप्फुसे वक्के। सबला णेरइयाणं कड्ढेन्ति तहिं अपुण्णाणं ॥ ७१ ॥ असिसत्तिकोन्ततोमरसूलतिसूलेसु सूइचियगासु। पोयन्ति रुद्दकम्मा उ णरगपाला तहिं रोद्दा ॥ ७२ ॥ भञ्जन्ति अङ्गमङ्गाणि ऊरू बाहू सिराणि करचरणे। कप्पेन्ति कप्पणीहिं उवरुद्धा पावकम्मरया ॥७३॥ मीरासु सुण्ठएसु य कन्दूसु पयण्डएसु य पयन्ति। कुम्भीसु य लोहिएसु य पयन्ति काला उ णेरइए ॥ ७४ ॥ कप्पन्ति कागिणीमंसगाणि छिन्दन्ति सीहपुच्छाणि। खावन्ति य णेरइए महकाला पावकम्मरए ॥ ७५ ॥ हत्थे पाए ऊरू बाहुसिरापायअङ्गमङ्गाणि। छिन्दन्ति पगामं तू असिणेरइए निरयपाला ॥ ७६ ॥ कण्णोट्ठणासकरचरणदसणत्थणफुग्गऊरुबाहूणं। छेयणभेयणसाडण असिपत्तधणूहिँ पाडन्ति ॥७७॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुम्भीसु य पयणेसु य लोहीसु य कन्दुलोहिकुम्भीसु। कुम्भी य णरयपाला हणन्ति पाडन्ति णरएसु ॥७८॥ तडतडतडस्स भज्जन्ति भज्जणे कलम्बुवालुगापट्टे। वालूगा णेइरया लोलन्ती अम्बरतलम्मि ॥ ७९ ॥ पूयरुहिरकेसट्ठिवाहिणी कलकलेन्तजलसोया। वेयरणिणिरयपाला णेरइए ऊ पवाहन्ति ॥ ८० ॥ कप्पेन्ति करकएहिं तच्छिन्ति परोप्परं परसुएहिं। सिम्बलितरुमारुहन्ती खरस्सरा तत्थ णेरइए ॥८१॥ भीए य पलायन्ते समन्ततो तत्थ ते णिरुम्भन्ति। पसुणो जहा पसुवहे महघोसा तत्थ णेरइए ॥८२॥५॥ पाहन्ने महसद्दो दव्वे खेत्ते य कालभावे य। वीरस्स उ णिक्खेवो चउक्कओ होइ णायव्वो ॥८३॥ थुइणिक्खेवो चउहा आगन्तुअभूसणेहिं दव्वथुई। भावे सन्ताण गुणाण कित्तणा जे जहिं भणिया ॥८४॥ पुच्छिसु जम्बुणामो अज्जसुहम्मा तओ कहेसी य। एव महप्पा वीरो जयमाह तहा जएज्जाहि ॥ ८५ ॥ ६ ॥ सीले चउक्क दव्वे पाउरणाभरणभोयणाईसु। भावे उ ओहसीलं अभिक्खमासेवणा चेव ॥ ८६ ॥ ओहे सीलं विरई विरयाविरई य अविरइ असीलं। धम्मा णाणतवाई अपसत्थ अहम्मकोवाई ॥८७॥ परिभासिया कुसीला य एत्थ जावन्ति अविरया केई। सुत्ति पसंसा सुद्धो कुत्ति दुगुञ्छा अपरिसुद्धो ॥८८॥ अप्फासुयपडिसेविय णामं भुञ्जो य सीलवाई य। फासुं वयन्ति सीलं अफासुया मो अभुञ्जन्ता ॥८९॥ जह णाम गोयमा चण्डिदेवगा वारिभद्दगा चेव। जे अग्गिहोत्तवाई जलसोयं जे य इच्छन्ति ॥ ९० ॥ ७ ॥ विरिए छक्कं दव्वे सच्चित्ताचित्तमीसगं चेव। दुपयचउप्पयअपयं एयं तिविहं तु सच्चित्तं ॥ ९१ ॥ अच्चित्तं पुण विरियं आहारावरणपहरणाईसु । जह ओसहीण भणियं विरियं रसवीरियविवागो ॥ ९२ ॥ आवरणे कवयाई चक्काईयं च पहरणे होन्ति। खेत्तम्मि जम्मि खेत्ते काले जं जम्मि कालम्मि ॥ ९३ ॥ भावो जीवस्स सवीरियस्स विरियम्मि लद्धि णेगविहा। ओरस्सिन्दियअज्झप्पिएसु बहुसो बहुविहीयं ॥ ९४ ॥ मणवइकाया आणापाणू संभव तहा य संभवे। सोत्ताईणं सद्दाइएसु विसएसु गहणं च॥ ९५ ॥ उज्जमधिइधीरत्तं सोण्डीरत्तं खमा य गम्भीरं। उवओगजोगतवसंजमाइयं होइ अज्झप्पे ॥९६॥ सबंपि य तं तिविहं पण्डिय बालविरियं च मीसं च। अहवावि होइ दुविहं अगारऽणगारियं चेव॥९७॥ सत्थं असिमाईयं विज्जा मन्ते य देवकम्मकयं। पत्थिववारुणअग्गेय वाउ तह मीसगं चेव॥९८॥८॥ धम्मो पुव्वुद्दिट्ठो भावधम्मेण एत्थ अहिगारो। एसेव होइ धम्मो एसेव समाहिमग्गोत्ति॥९९॥ णामंठवणाधम्मो दव्वधम्मो य भावधम्मो य। सचित्ताचित्तमीसग गिहत्थदाणे दवियधम्मे॥१००॥ लोइयलोउत्तरिओ दुविहो पुण होइ भावधम्मो उ। दुविहोवि दुविहतिविहो पञ्चविहो होइ णायव्वो॥१०१॥ पासत्थोसण्णकुसील संथवो ण किर वट्टई काउं। सूयगडे अज्झयणे धम्मम्मि निकाइयं एयं॥१०२॥९॥ आयाणपएणाघं गोण्णं णामं पुणो समाहित्ति। णिक्खिविऊण समाहिं भावसमाहीइ पगयं तु॥१०३॥ णामंठवणादविए खेत्ते काले तहेव भावे य। एसो उ समाहीए णिक्खेवो छव्विहो होइ॥१०४॥ पञ्चसु विसएसु सुभेसु दव्वंमी ता भवे समाहित्ति। खेत्तं तु जम्मि खेत्ते काले कालो जहिं जो उ॥१०५॥ भावसमाहि चउव्विह दंसणणाणे तवे चरित्ते य। चउसुवि समाहियप्पा सम्मं चरणट्ठिओ साहू॥१०६॥१०॥ णामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव भावे य। एसो खलु मग्गस्स य णिक्खेवो छव्विहो होइ॥१०७॥ फलगलयन्दोलणवित्तरज्जुदवणबिलपासमग्गे य। खीलगअयपक्खिपहे छत्तजलागास दव्वम्मि॥१०८॥ खेत्तम्मि जम्मि खित्ते काले कालो जहिं हवइ जो उ। भावम्मि होइ दुविहो पसत्थ तह अप्पसत्थो य॥१०९॥ दुविहम्मिवि तिगभेदो णेओ तस्स उ विणिच्छओ दुविहो। सुगइफल दुग्गइफलो पगयं सुगईफलेणित्थ॥११०॥ दुग्गइफलवाईणं तिण्णि तिसट्ठा सयाइँ वाईणं। खेमे य खेमरूवे चउक्कगं मग्गमाईसु॥१११॥ सम्मप्पणिओ मग्गो णाणे तह दंसणे चरित्ते य। चरगपरिव्वायाईचिण्णो मिच्छत्तमग्गो उ॥११२॥ इड्ढिरससायगुरुया छज्जीवनिकायघायनिरया य। जे उवदिसन्ति मग्गं कुमग्गमग्गस्सिया ते उ ॥ ११३ ॥ तवसंजमप्पहाणा गुणधारी जे वयन्ति सब्भावं। सव्वजगज्जीवहियं तमाहु सम्मप्पणीयमिणं॥११४॥ पन्थो मग्गो णाओ विहि धिइ सुगई हियं तह सुहं च। पत्थं सेयं णिव्वुइ णिव्वाणं सिवकरं चेव॥११५॥११॥ समवसरणेवि छक्कं सचित्ताचित्तमीसगं दव्वे। खेत्तम्मि जम्मि खेत्ते काले जं जम्मि कालम्मि ॥ ११६ ॥ भावसमोसरणं पुण णायव्वं छव्विहम्मि भावम्मि। अहवा किरिय अकिरिया अन्नाणी चेव वेणइया ॥ ११७ ॥ अत्थित्ति किरियवाई वयन्ति नत्थित्ति अकिरियवाई य। अन्नाणी अन्नाणं वेणइया वेणइयवाई ॥ ११८ ॥ असियसयं किरियाणं अकिरियाणं च होइ चुलसीई। अन्नाणिय सत्तट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसा ॥११९॥ तेसिं मताणुमएणं पन्नवणा वण्णिया इहऽज्झयणे। सब्भावणिच्छयत्थं समोसरणमाहु तेणं तु ॥ १२० ॥ सम्मद्दिट्ठी किरियावाई मिच्छा य सेसगा वाई। जहिऊण मिच्छवायं सेव (प्र. सद्दह) ह वायं इमं सच्चं ॥ १२१ ॥ १२ ॥ णामतहं ठवणतहं दव्वतहं चेव होइ भावतहं। दव्वतहं पुण जो जस्स सभावो होइ दव्वस्स॥ १२२ ॥ भावतहं पुण नियमा णायव्वं छव्विहम्मि भावम्मि। अहवाऽवि नाणदंसणचरित्तविणएण अज्झप्पे॥१२३॥ जह सुत्तं तह अत्थो चरणं चारो तहत्ति णायव्वं। सन्तम्मि पसंसाए पगयं असई दुगुञ्छाए॥१२४॥ आयरियपरंपरएण आगयं जो उ छेयबुद्धीए। कोवेइ छेयवाई जमालिनासं स णासिहिइ॥ १२५॥ ण करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणोऽवि संजमतवेसुं। तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेअव्वो जइजणेणं॥ १२६॥ १३॥ गन्थो पुव्वुद्दिट्ठो दुविहो मिस्सो य होइ णायव्वो। पव्वावण सिक्खावण पगयं सिक्खावणाए उ॥ १२७॥ सो सिक्खगो य दुविहो गहणे आसेवणाय णायव्वो। गहणम्मि होइ तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य॥ १२८॥ आसेव-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाय दुविहो मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य। मूलगुणे पञ्चविहो उत्तरगुण बारसविहो उ॥ १२९॥ आयरिओडवि य दुविहो पव्वावन्तो य सिक्खवन्तो य। सिक्खावन्तो दुविहो गहणे आसेवणे चेव ॥१३०॥ गाहावेन्तो तिविहो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव। मूलगुण उत्तरगुणे दुविहो आसेवणाए उ॥१३१॥१४॥ आयाणे गहणम्मि य णिक्खेवो होइ दोण्हवि चउक्को। एगट्ठं नाणट्ठं च होज्ज पगयं तु आयाणे॥ १३२॥ जं पढमस्सन्तिमए बिइयस्स उ तं हवेज्ज आदिम्मि। एएणायाणिज्जं एसो अन्नोडवि पज्जाओ ॥ १३३॥ णामाई ठवणाई दव्वाई चेव होइ भावाई। दव्वाई पुण दव्वस्स जो सभावो सए ठाणे॥१३४॥ आगमणोआगमओ भावाई तं बुहा उवदिसन्ति। णोआगमओ भावो पञ्चविहो होइ णायव्वो॥१३५॥ आगमओ पुण आदी गणिपिडगं होइ बारसङ्गं तु। गन्थसिलोगो पदपादअक्खराइं च तत्थादी ॥ १३६॥१५॥ णामंठवणागाहा दव्वगाहा य भावगाहा य। पोत्थगपत्तगलिहिया सा होई दव्वगाहा उ॥१३७॥ होइ पुण भावगाहा सागारुवओगभावणिप्फन्ना। महुराभिहाणजुत्ता तेणं गाहत्ति णं बिन्ति॥१३८॥ गाहीकया व अत्था अहवण सामुद्दएण छन्देण। एएण होइ गाहा एसो अन्नोडवि पज्जाओ॥१३९॥ पण्णरससु अज्झयणेसु पिण्डियत्थेसु जो अवितहत्ति। पिण्डियवयणेणऽत्थं गहेइ तम्हा तओ गाहा॥१४०॥ सोलसमे अज्झयणे अणगारगुणाण वण्णणा भणिया। गाहासोलसणामं अज्झयणमिणं ववदिसेन्ति॥१४१॥ अ.१६॥ श्रु.१॥ णामंठवणादविए खेत्ते काले तहेव भावे य। एसो खलु महतम्मी निक्खेवो छव्विहो होइ॥१४२॥ णामंठवणादविए खेत्ते काले तहेव भावे य। एसो खलु अज्झयणे निक्खेवो छव्विहो होइ॥१४३॥ णामंठवणादविए खेत्ते काले य गगण संठाणे। भावे य अट्ठमे खलु णिक्खेवो पोण्डरीयस्स॥१४४॥ जो जीवो भविओ खलुववज्जिकामो य पुण्डरीयम्मि। सो दव्वपुण्डरीओ भावम्मि विजाणओ भणिओ॥१४५॥ एगभविए य बद्धाउए य अभिमुहियनामगोए य। एए तिण्णिवि देसा दव्वम्मि य पोण्डरीयस्स॥१४६॥ तेरिच्छिया मणुस्सा देवगणा चेव होन्ति जे पवरा। ते होन्ति पुण्डरीया सेसा पुण कण्डरीया उ॥१४७॥ जलयर थलयर खयरा जे पवरा चेव होन्ति कन्ता य। जे य सभावेऽणुमया ते होन्ती पोण्डरीया उ॥१४८॥ अरिहन्त चक्कवट्टी चारण विज्जाहरा दसारा य। जे अन्न इड्ढिमन्ता ते होन्ती पोण्डरीया उ॥१४९॥ भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणियाण देवाणं। जे तेसिं पवरा खलु ते होन्ती पोण्डरीया उ॥१५०॥ कंसाणं दूसाणं मणिमोत्तियसिलपवालमाईणं। जे य अचित्ता पवरा ते होन्ती पोण्डरीया उ॥ १५१॥ अचित्तमीसगेसुं दव्वेसुं जे हवंति पवरा उ। ते होंति पोण्डरीया सेसा पुण कंडरीया उ ॥ १५२॥ जाइं खेत्ताइं खलु सुहाणुभावाइं होन्ति लोगम्मि। देवकुरुमाइयाइं ताइं खेत्ताइँ पवराइं॥१५३॥ जीवा भवट्ठिईए कायठिईए य होन्ति जे पवरा। ते होन्ति पोण्डरीया अवसेसा कण्डरीया उ॥१५४॥ गणणाए रज्जू खलु संठाणं चेव होन्ति चउरंसं। एयाइँ पोण्डरीयाइं होन्ति सेसाइँ इयराइं॥१५५॥ ओदइए उवसमिए खइए य तहा खओवसमिए य। परिणामसंनिवाए जे पवरा तेऽवि ते चेव॥१५६॥ अहवावि नाणदंसणचरित्तविणए तहेव अज्झप्पे। जे पवरा होन्ति मुणी ते पवरा पुण्डरीया उ॥१५७॥ एत्थं पुण अहिगारो वणस्सइकायपुण्डरीएणं। भावम्मि य समणेणं अज्झयणे पोण्डरीयम्मि॥१५८॥ उवमा य पोण्डरीए तस्सेव य उवचएण निज्जुत्ती। अधिगारो पुण भणिओ जिणोवदेसेण सिद्धित्ति॥ १५९॥ सुरमणुयतिरियनिरओवगेसु मणुया पढू चरित्तम्मि। अविय महाजणनेयत्ति चक्कवट्टिम्मि अधिगारो॥ १६०॥ अवि य हु भारियकम्मा नियमा उक्कस्सनिरयठिइगामी। तेवि हु जिणोवएसेण तेणेव भवेण सिज्झन्ति ॥१६१॥ जलमालकद्दमालं बहुविहवल्लिगहणं च पुक्खरिणिं। जंघाहि व बाहाहि व नावाहि व (प्र.वा वा) तं दुरवगाहं॥ १६२॥ पउमं उल्लंघेत्तुं ओयरमाणस्स होइ वावत्ती। किं नत्थि मे उवाओ जेणुल्लंघेज्ज अविवन्नो?॥१६३॥ विज्जा व देवकम्मं अहवा आगासिया विउव्वणया। पउमं उल्लंघेत्तुं न एसुवाओ जिणक्खाओ॥ १६४॥ सुद्धप्पओगविज्जा सिद्धा उ जिणस्स जाणणा-विज्जा। भवियजणपोण्डरीया उ जाए सिद्धिं गतिमुवेन्ति॥१६५॥ ?॥ किरियाओ भणियाओ किरियाठाणंति तेण अज्झयणं। अहिगारो पुण भणिओ बन्धे तह मोक्खमग्गे य॥ १६६॥ दव्वे किरिएजणया य पयोगुवायकरणिज्जसमुयाणे। इरियावह संमत्ते सम्मामिच्छा य मिच्छत्ते॥१६७॥ नामं ठवणा दविए खेत्तऽद्धा उड्ढ उवरई वसही। संजम पग्गह जोहे अचल गणण संधणा भावे॥१६८॥ समुयाणियाणिह तओ सम्मपउत्ते य भावठाणम्मि। किरियाहिं पुरिस पावाइए उ सव्वे परिक्खेज्जा॥१६९॥२॥ नामंठवणादविए खेत्ते भावे य होइ बोद्धव्वो। एसो खलु आहारे निक्खेवो होइ पञ्चविहो॥१७०॥ दव्वे सचित्ताई खेत्ते नयरस्स जणवओ होइ। भावाहारो तिविहो ओए लोमे य पक्खेवे॥ १७१॥ सरीरेणोयाहारो तयाय फासेण लोमआहारो। पक्खेवाहारो पुण कावलिओ होइ नायव्वो॥१७२॥ ओयाहारा जीवा सव्वे अपजत्तगा मुणेयव्वा। पज्जत्तगा य लोमे पक्खेवे होन्ति नायव्वा॥१७३॥ एगिन्दियदेवाणं नेरइयाणं च नत्थि पक्खेवो। सेसाणं पक्खेवो संसारत्थाण जीवाणं॥१७४॥ एक्कं च दो व समए तिण्णि व समए मुहुत्तमद्धं वा। साईयमनिहणं पुण कालमणाहारगा जीवा॥१७५॥ एक्कं च दो व समए केवलिपरिवज्जिया अणाहारा। मन्थम्मि दोण्णि लोए य पूरिए तिण्णि समया उ॥१७६॥ अन्तोमुहुत्तमद्धं सेलेसीए भवे अणाहारा। साईयमनिहणं पुण सिद्धा णाहारगा होन्ति॥१७७॥ जोएण कम्मएणं आहारेई अणन्तरं जीवो। तेण परं मीसेणं जाव सरीरस्स निप्फत्ती॥ १७८॥ णामं ठवणपरिन्ना दव्वे भावे य होइ नायव्वा। दव्वपरिन्ना तिविहा भावपरिन्ना भवे दुविहा॥ १७९॥ ३॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामंठवणादविए अइच्छ पडिसेहए य भावे य। एसो पच्चक्खाणस्स छव्विहो होइ निक्खेवो ॥१८०॥ मुलगुणेसु य पगयं पच्चक्खाणे इहं अधीगारो। होज्ज हु तप्पच्चइया अप्पच्चक्खाणकिरिया उ ॥१८१॥ ४॥ णामंठवणाऽऽयारे दव्वे भावे य होइ नायव्वो। एमेव य सुत्तस्सा निक्खेवो चउविहो होइ ॥१८२॥ आयारसुयं भणियं वज्जेयव्वा सया अणायारा। अबहुसुयस्स हु होज्ज विराहणा इत्थ जइयव्वं॥ १८३ ॥ एयस्स उ पडिसेहो इहमज्झयणम्मि होइ नायव्वो। तो अणगारसुयंति य होई नामं तु एयस्स ॥१८४॥५॥ नामंठवणाअइं दव्वइं चेव होइ भावइं। एसो खलु अइस्स उ निक्खेवो चउव्विहो होइ ॥१८५॥ उदगइं सारइं छवियइ वसइ तह सिलेसइं। एयं दव्वइं खलु भावेणं होइ रागइं ॥१८६॥ एगभवियबद्धाऊए य अभिमुहियनामगोए य। एए तिण्णि पगारा दव्वइे होन्ति नायव्वा ॥१८७॥ अइपुरे अइसुतो नामेणं अइओत्ति अणगारो। तत्तो समुट्ठियमिणं अज्झयणं अइइज्जंति ॥१८८॥ कामं दुवालसङ्गं जिणवयणं सासयं महाभागं। सव्वज्झयणाइँ तहा सव्वक्खरसंनिवाया य॥ १८९॥ तहवि य कोई अत्थो उप्पज्जइ तम्मि तम्मि समयम्मि। पुव्वभणिओऽणुमओ य होइ इसिभासिएसु जहा ॥ १९० ॥ अज्जदएण गोसालभिक्खुबम्भवईतिदण्डीणं। जह हत्थितावसाणं कहियं इणमो तहा वोच्छं ॥१९१॥ गामे वसन्तपुरए सामइओ घरणिसहिओ निक्खन्तो। भिक्खायरियादिट्ठा ओहासिय भत्तवेहासं ॥१९२॥ संवेगसमावन्नो माई भत्तं चइत्तु दियलोए। चइऊणं अइपुरे अइसुओ अइओ जाओ ॥१९३॥ पीई य दोण्ह दूओ पुच्छणमभयस्स पट्ठवे सोऽवि। तेणावि सम्मदिट्ठित्ति होज्ज पडिमा रहम्मि गया॥ १९४ ॥ दट्ठुं संबुद्धो रक्खिओ य आसाण वाहण पलाओ। पव्वावन्तो धरिओ रज्जं न करेइ को अन्नो? ॥ १९५ ॥ अगणिन्तो निक्खन्तो विहरइ पडिमाइ दारिगावरिओ। सुवरण वसुहाराओ रन्नो कहणं च देवीए ॥१९६॥ तं नेइ पिया तीसे पुच्छण कहणं च वरण दो वारे। जाणासि? पायचिंधं आगमणं कहण निग्गमणं ॥१९७॥ पडिमागयस्समीवे सप्परिवारा अभिक्ख पडिवयणं। भोग सुयाऽऽपुच्छण सुअबन्ध पुण्णे य निग्गमणं ॥१९८॥ रायगिहागम चोरा रायभया कहण तेसि दिक्खा य। गोसालभिक्खुबम्भीतिदण्डिया तावसेहि सह वाओ ॥१९९॥ (प्र.हत्थी य तेसि कसणं जिण वीरसगास निक्खमणं) वाए पराइया ते सव्वेवि य सरणमब्भुवगया उ। अइगसहिया सव्वे जिणवीरसगासें निक्खन्ता ॥२००॥ ण दुक्करं वारणपासमोयणं, गयस्स मत्तस्स वणम्मि रायं!। जहा उ चत्तावलिएण तन्तुणा, सुदुक्करं मे पडिहाइ मोयणं ॥२०१॥६॥ णामअलं ठवणअलं दव्वअलं चेव होइ भावअलं। एसो अलसद्दम्मि उ निक्खेवो चउविहो होइ ॥२०२॥ पज्जत्तीभावे खलु पढमो बीओ भवे अलंकारे। तइयो ऊ (प्र.विय) पडिसेहे अलसद्दो होइ नायव्वो ॥२०३॥ पडिसेहणे णगारस्स इत्थीसद्देण चेव अलसद्दो। रायगिहे नयरम्मी नालन्दा होइ बाहिरिया ॥२०४॥ नालन्दाएँ समीवे मणोरहे (प्र.हरे) भासि इन्दभुइणा उ। अज्झयणं उदगस्स उ एयं नालन्दइज्जं तु ॥२०५॥ पासावच्चिज्जो पुच्छियाइओ अज्जगोयमं उदगो। सावगपुच्छा धम्मं सोउं कहियम्मि उवसन्तो ॥२०६॥ इति चरमश्रुतकेवलिभगवद्भद्रबाहुस्वामिप्रणीता श्रीसूत्रकृताङ्गनिर्युक्तिः, उत्कीर्णेयं श्रीसिद्धक्षेत्रीयागममन्दिरे वीर २४६७॥